thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 27 17 से 23 जुलाई 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 श्रा. कृ. 06

आर्य युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का सार्वदेशिक सभा प्रधान बनने पर हरियाणा की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा भव्य सम्मान समारोह का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न

सूखी पड़ी बगिया रूपी आर्य समाज को फूलों से महकाने आए हैं स्वामी आर्यवेश

- स्वामी चन्द्रवेश

13 जुलाई, 2014, रोहतक : आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर निर्वाचित होने के बाद पूरे हरियाणा की आर्य समाजों में भी अन्य राज्यों की तरह उत्साह व आशा का वातावरण था। हर आर्य इस चाव में भरा हुआ था कि अब वास्तव में आर्य समाज अपने पुराने गौरव को प्राप्त करेगा। इसलिए वो स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन करने के लिए लालायित एवं उत्साहित थे। उनकी यह आशा उस समय पूरी हुई जब आर्य समाज हरियाणा के वरिष्ठ नेताओं तथा कार्यकर्ताओं ने स्वामी आर्यवेश जी के सम्मान समारोह का आयोजन आर्य समाज की गतिविधियों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम (टिटौली) में किया गया। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ आर्य संन्यासी, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, दर्शनाचार्य, व्याकर्णाचार्य, शम्भू दयाल संन्यास आश्रम गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चन्द्रवेश जी ने की।

आर्य राष्ट्र निर्माण के संकल्प को पूरा करने का दायित्व अब स्वामी आर्यवेश जी के कंधों पर - स्वामी रामवेश

वर्तमान समय में सबसे सक्षम, सुयोग्य व संगठन शक्ति से परिपूर्ण नेतृत्व के धनी हैं स्वामी आर्यवेश - डॉ. अनिल आर्य

हमें जहाँ स्वामी आर्यवेश जी को प्रधान पद की बधाई देनी है वहीं स्वामी अग्निवेश जी के त्याग को भी नमन करना चाहिए - बहन प्रवेश आर्या

दयानन्द के सच्चे सिपाही अब स्वामी आर्यवेश जी को अपनी ताकत प्रदान करें - बिरजानन्द एडवोकेट

अब आर्य समाज को इस नए नेतृत्व को अपना समर्थन देना चाहिए - अतर सिंह स्नेही

इस अवसर पर अपने धन्यवाद उद्बोधन में नव-निर्वाचित प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज

यहाँ उपस्थित भारी जन-समूह तथा उत्साह देखकर मेरा मनोबल अत्यधिक बढ़ गया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद का जो गुरुत्तर दायित्व मुझे सौंपा गया है मैं अत्यन्त आशान्वित हूँ कि आपके सहयोग से उसे निष्ठा पूर्वक निभा पाऊँगा। आर्य समाज को गति प्रदान करने के लिये प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम युद्ध स्तर पर प्रारम्भ किया जायेगा। हजारों योग्य एवं शिक्षित युवाओं को आर्य समाज में दीक्षित कर पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया जायेगा तथा आर्य समाज में नया जीवन फूंकने के लिए विशेष प्रयास किये जायेंगे। पद यात्राओं, शिविरों, व्यायाम प्रदर्शनों जन-चेतना यात्राओं के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार कार्य को बढ़ाया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि मेरी पहली प्राथमिकता आर्य समाज में एकता स्थापित करने की होगी। आज आर्य समाज में मतभेद, मनभेद, मुकदमेंबाजी तथा पदलोलुपता के कारण आर्य समाज की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लग रहा है। हमने पहले भी बहुत प्रयास किये हैं और अब पुन: आर्य समाज की एकता के लिए हर सम्भव प्रयास किये जायेंगे। हम सभी को अपना बनाकर चलना चाहते हैं। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज को प्रगति पथ पर ले जाने का जो हमारा संकल्प है उसके लिये हम निरन्तर सार्थक प्रयास करते रहेंगे।

स्वामी जी ने आर्य समाज का आधार वेदों की चर्चा करते हुए कहा कि वेदों की महिमा अपार है मनु महाराज ने वेदों को 'सर्वज्ञान मयोहिस:'' सर्व वेदात् प्रसिद्धति तथा वेदोऽखिलो धर्म मूलम् कहा है। वेद में समस्त ज्ञान-विज्ञान समाहित है। सारी संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं का आधार वेद है। अत: वेदों का पठन-पाठन और मनन-चिन्तन प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। अत: हमने सर्व प्रथम वेदों को पुन: प्रकाशित करने का निश्चय किया है प्रथम आवृत्ति में 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। परमात्मा की अमृतरूपी वाणी को घर-घर पहुँचाने में आप सबका सहयोग अपेक्षित है। हमने निश्चय किया है कि जो महानुभाव एक लाख रुपये का सहयोग प्रदान करेंगे, उन्हें दस सैट नि:शुल्क प्रदान किये जायेंगे। तथा वेद सैट में उनका चित्र तथा संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जायेगा। एक लाख रुपये से अधिक धन देने वाले महानुभावों को विशेष योजना का लाभ प्राप्त होगा। स्वामी जी ने कहा कि यह बहुत बड़ा कार्य है और इसमें लगभग 3 करोड़ रुपये व्यय आने का अनुमान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सबके सहयोग से यह कार्य बहुत शीघ्र पूर्ण होगा।

इससे पूर्व आर्य समाज के वरिष्ठ नेताओं तथा गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी जी के प्रधान पद पर सुशोभित होने पर उन्हें बधाई दी, अभिनन्दन किया तथा अपने उद्गार व्यक्त किये।

स्वामी चन्द्रवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आर्य जगत के शीर्ष पुरुष हैं स्वामी आर्यवेश जी जो सूखने जा रहे आर्य समाज रूपी बाग को हरा-भरा करने का ऐतिहासिक कार्य अपने हाथों से करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आर्य जगत के इस बगीचे में सभी प्रकार के पेड़ व फल फूल आदि के संयोजन का कार्य सफल होगा। भरे दिल से स्वामी जी ने कहा कि अब अवसर आया है जब हमारे जैसे लोगों को भी सम्मान पूर्वक प्रचार-प्रसार करने का अवसर मिलेगा। वर्ना पिछले दिनों बड़े-बड़े मंचों से संन्यासियों को उतारते मैंने देखा है। परन्तु स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में संन्यासी ही नहीं, हर विद्वान् से लेकर नेता व छोटे से छोटे कार्यकर्ता का सम्मान होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि स्वामी जी के प्रधान पद की जिम्मेदारी लेने के बाद हम सबकी जिम्मेदारियां बढ़ गई हैं। हमें स्वामी जी के साथ और कर्मठता के साथ काम करना पड़ेगा। अब नशामुक्त राष्ट्र की परिकल्पना को मूर्त रूप देने का कार्य पूर्ण हो सकेगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि वर्तमान समय में सबसे सक्षम सुयोग्य, कर्मठ एवं संगठन शक्ति से परिपूर्ण व्यक्ति कोई है तो वो स्वामी आर्यवेश जी हैं। आज इन्हें ताकत देने की आवश्यकता है। सभी अपने नम्बर एवं ई-मेल लिखवा दें ताकि आपको हर सूचना समय पर मिल सके।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा की महामन्त्री बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि आज जहां हमें स्वामी आर्यवेश जी को बधाई देनी है, वहीं स्वामी अग्निवेश जी ने त्याग की जिस पराकाष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया उसको भी नमन करना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा कि अब समय आ गया है कि दयानन्द के सच्चे सिपाहियों को एकजुट होकर स्वामी जी का सहयोग करना है ताकि पुराना गौरव लौटाया जा सके।

हरियाणा में आर्य नेता श्री अतर सिंह स्नेही ने कहा कि जो लोग आर्य समाज की एकता में बिगाड़ कर रहे हैं उन्हें अब एक मंच पर आना होगा। अन्यथा आने वाली पीढ़ियां तथा समय उन्हें कभी माफ नहीं करेगा। उन्होंने ये बातें हरियाणा के बारे में कही।

योग गुरु और परिषद् के राष्ट्रीय व्यायामाचार्य आचार्य हरपाल (सूरत) ने कहा कि स्वामी जी का व्यक्तित्व एक चुम्बकीय व्यक्तित्व है जिससे लोग अत्यधिक प्रभावित होते हैं। यह आर्य समाज का एक स्वर्णिम अवसर है जिसकी सभी प्रतीक्षा में थे।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय महामन्त्री प्रो.

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्मान समारोह में वेदों के प्रकाशनार्थ दान देने वाले महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद

माता मूर्ति देवी जी

आचार्य सन्तराम जी

डॉ. लक्ष्मणदास जी

माता मूर्ति देवी जी ने 1,25,000/- रुपये प्रदान करने की घोषणा की।

आचार्य सन्तराम आर्य जी ने 1,00,000/- रुपये प्रदान किये।

डॉ. लक्ष्मण दास आर्य जी 1,00,000/- रुपये प्रदान करने की घोषणा की।

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक ने 21,000/- रुपये प्रदान करने की घोषणा की।

वेद प्रचार मण्डल, हिसार ने 11,000/- रुपये प्रदान करने की घोषणा की।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

23 जुलाई जयन्ती पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष - चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था?काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है?युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम?'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता?मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेतों की सज़ा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।

आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम्' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी की सज़ा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के

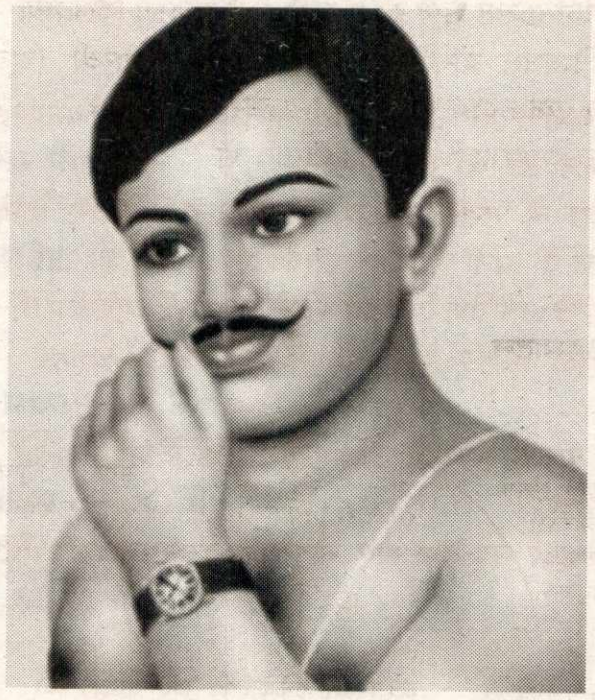

कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था ..... धांय–धांय कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

स्वामी अग्निवेश जी के वक्तव्य से पौराणिक जगत में हलचल

समूचा आर्य समाज संगठित होकर पाखण्ड का खण्डन करे

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

पिछले दिनों हुआ शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी तथा साईं भक्तों के बीच वाक्युद्ध अब गम्भीर स्थिति तक पहुँच चुका है। आर्य समाज के क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने स्वामी स्वरूपानन्द जी के वक्तव्यों पर कड़ा विरोध करते हुए मंदिरों में होने वाली मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को सिद्ध करने के लिए कहा है। उन्होंने स्वामी स्वरूपानन्द को चुनौती देते हुए कहा कि यदि मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से उसमें सजीवता आती है तो वे किसी मुर्दे में प्राण डालकर उसे जीवित करके दिखायें। स्वामी अग्निवेश जी के इस वक्तव्य को जिसे उन्होंने टी. वी. डिवेट में दिया उसमें स्वामी स्वरूपानन्द जी और पौराणिक जगत में तहलका मच गया है और वे लोग स्वामी अग्निवेश जी पर अनर्गल आरोप लगाकर अपनी खीज प्रकट कर रहे हैं।

पाखण्ड और अन्ध विश्वास का स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज ने हमेशा कड़ा विरोध किया है और इसे मिटाने के लिए हमेशा सक्रियता दिखाई है। आज एक बार फिर वह समय आ गया है जिसमें हम अपनी आपसी फूट को भूलकर एकजुट होकर पत्रकार सम्मेलन करके, गोष्ठियाँ करके प्रस्ताव पास करके टी. वी. तथा अखबारों में विरोध पत्र भेजकर आर्य समाज के सिद्धान्तों को सार्वजनिक कर सकते हैं। हम सबको आर्य समाज के मन्तव्यों को ध्यान में रखकर साईं और स्वरूपानन्द विवाद को आर्य समाज के सिद्धान्तों के चश्में से देखना होगा तभी आर्य समाज एकबार फिर पाखण्ड का पर्दाफाश कर पायेगा।

thearyasamaj.org

आर्य समाज में नये युग की शुरुआत

युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के मार्ग दर्शन में एक हजार युवा आर्य समाज में दीक्षित

पूरे प्रान्त के विभिन्न जिलों से पधारे एक हजार युवाओं को दी गई वैदिक मान्यताओं की जानकारी

- 40 से ज्यादा व्यायाम शिक्षकों एवं योगाचार्यों ने दिया प्रशिक्षण
- बोक्सिंग एवं लाठी चलाना रहा आकर्षण का केन्द्र
- 146 युवाओं ने छोड़े नशे व 25 ने छोड़े अण्डे व मांस
- विपरीत परिस्थितियों में भी सफलता के चरम तक पहुंचा प्रान्तीय शिविर
- एक सौ युवाओं को व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर के लिए चयनित किया गया
- आर्य समाज की प्रमुख विभूतियां पहुंची युवाओं का मार्गदर्शन करने
- बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय प्रधाना बहन पूनम आर्या ने युवाओं को कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध संकल्प दिलवाया
- विश्व विख्यात योग गुरु आचार्य हरपाल शास्त्री (सूरत) ने करवाया एक हजार युवाओं का यज्ञोपवीत संस्कार
- गुरुकुल जैसा रहा शिविर का वातावरण
- आर्य समाज नरवाना के प्रधान श्री इन्द्रजीत आर्य ने किया ध्वजारोहण
- आर्य समाज नागौरी गेट हिसार के प्रधान चौ. बदलू राम आर्य ने किया उद्घाटन

8 जून, 2014, खटकड़ (जीन्द) हरियाणा। आर्य समाज के सबसे मजबूत एवं सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में 2 से 8 जून, 2014 तक जीन्द जिले के ऐतिहासिक गांव खटकड़ के राजकीय उच्च विद्यालय में सात दिवसीय प्रान्तीय युवा निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में पूरे प्रान्त के लगभग सभी जिलों के एक हजार युवकों ने भाग लिया। जिनकों परिषद् के सुयोग्य व्यायाम शिक्षकों ने विश्वविख्यात योगाचार्य आचार्य हरपाल शास्त्री जी के मार्ग दर्शन एवं निर्देशन में संन्ध्या, हवन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, लाठी, बॉक्सिंग, स्तूप निर्माण आदि का प्रशिक्षण दिया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी आर्यवेश जी के मार्ग दर्शन में शिविर समापन पर संकल्प के साथ युवाओं को आर्य समाज की सदस्यता दी गई। इससे पूर्व स्वामी आर्यवेश जी द्वारा ही यज्ञ पर बुराईयां छोड़ने की प्रतिज्ञा भी करवाई गई। जिसमें जहां सबने महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने, प्रतिदिन एक काम परोपकार का करने का संकल्प लिया वहीं सामाजिक बुराईयां तथा दुर्व्यसनों से दूर रहने का प्रण भी किया। इस अवसर पर 146 युवाओं ने नशे छोड़ने तथा 25 ने मांस तथा अण्डे को जीवन से त्यागने का संकल्प लिया। यह इस शिविर की विशेष उपलब्धि थी।

नवयुवकों में आर्य समाज की मान्यताएं महर्षि दयानन्द की विचारधारा तथा वेद के सिद्धान्तों को कूट-कूट कर भरने के लिए आर्य जगत की महान् विभूतियों ने अपनी ओर से भरपूर प्रयत्न किया। जिनमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान, विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, आर्य समाज की एकता के लिए निरन्तर संघर्षरत स्वामी आर्यवेश, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, परिषद् के राष्ट्रीय व्यायामचार्य स्वामी विजयवेश जी व आचार्य हरपाल शास्त्री (सूरत), परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी, परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान व बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, प्रान्तीय महामन्त्री बहन प्रवेश आर्या, शांतिधर्मी पत्रिका के सम्पादक सहदेव समर्पित, परिषद् के प्रान्तीय संरक्षक अतर सिंह स्नेही, दलबीर आर्य-मुकलान, डॉ. बलबीर जुलाना, परिषद् के प्रान्तीय कार्यकारी प्रधान अशोक एडवोकेट, बौद्धिकाध्यक्ष डॉ. अजीत कुमार आदि प्रमुख थे।

> आज समाज में प्रत्येक व्यक्ति को मनुष्य बनाने की आवश्यकता है। संकीर्णताओं से दूर रहकर अपने विचारों से नवीनता, आध्यात्मिकता, राजनीतिकता, सामाजिकता के गुणों का समावेश करें। पूरी पृथ्वी को अपना परिवार मानकर समाज में अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध आवाज उठाएं।
>
> - स्वामी अग्निवेश

विश्व विख्यात योग गुरु आचार्य हरपाल जी ने एक हजार युवाओं का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार करवाया। एक गुरुकुल जैसे वातावरण में इस तरह का कार्यक्रम रोमांचित करने वाला था। उन्होंने यज्ञोपवीत के महत्त्व पर प्रकाश भी डाला।

उद्घाटन समारोह :- आर्य समाज के इतिहास में ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है कि एक हजार युवाओं का सात दिवसीय युवा चरित्र-निर्माण शिविर आयोजित हो। इस ऐतिहासिक शिविर में ध्वजारोहण आर्य समाज नरवाना के प्रधान श्री इन्द्रजीत आर्य जी ने स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी के अतिरिक्त सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में किया। जबकि शिविर का उद्घाटन आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार के प्रधान चौ. बदलूराम आर्य व कोषाध्यक्ष बजरंग लाल गोयल ने किया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: 5 से 6.30 बजे तक आचार्य हरपाल शास्त्री जी द्वारा योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान का प्रशिक्षण भी दिया जाता था जिसमें शिविर के अतिरिक्त ग्रामीण भी भाग लेते थे। उसके पश्चात् व्यायाम शिक्षकों द्वारा पृथक-पृथक स्थानों पर प्रशिक्षण दिया जाता था।

संन्ध्या व हवन का प्रशिक्षण :- प्रतिदिन प्रात:काल संध्या व यज्ञ का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। आचार्य हरपाल शास्त्री जी जहां सामूहिक यज्ञ में दिशा-निर्देश करते वहीं युवाओं को संध्या एवं हवन के मन्त्रों की व्याख्या करते व उनका स्मरण भी करवाते थे।

> देश व समाज की वर्तमान परिस्थितियों में युवाओं को वेद के आधार पर सही दिशा देने की आवश्यकता है। आज नैतिकता, ईमानदारी सेवा एवं कर्त्तव्य परायणता आदि गुण व्यक्ति के जीवन से गायब है। विडम्बना की बात है कि भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अनैतिकता एवं राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संल्पित अधिकांश शिक्षित ही हैं। मात्र शिक्षित होने से किसी व्यक्ति का विकास नहीं होता उसके जीवन में वैदिक मान्यताओं के आधार पर नैतिकता कर्त्तव्य परायणता, ईमानदारी व सेवा के संस्कार डालना आवश्यक है। तभी महर्षि दयानन्द द्वारा परिकल्पित समाज की स्थापना हो सकती है।
>
> - स्वामी आर्यवेश

46 डिग्री तापमान, विपरीत परिस्थितियां, अत्यधिक व्यस्त दिनचर्या परन्तु जोश देखते ही बनता था।

जून की तपती दोपहरी में जब तापमान 46 डिग्री को भी पार कर जाता था तो लगता था कि कोई घटना ना हो जाए परन्तु युवाओं के जोश के सामने सब ठण्डा पड़ गया। अत्यधिक व्यस्त दिनचर्या में शिविर के तीसरे दिन शिविरार्थी इस तरह ढल गए मानो कई महीनों से इसी दिनचर्या में किसी गुरुकुल में रह रहे हैं। प्रात: 4 बजे से रात 10 बजे तक एक निश्चित दिनचर्या रहती थी।

सभी साथियों की कड़ी मेहनत से मिली सफलता :- शिविर को प्रारम्भ करने से पहले जो जोश व उत्साह साथियों में था वह जोश निरन्तर शिविर समाप्ति तक बना रहा। शिविर की पूर्ण व्यवस्था में परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी का मार्ग दर्शन निरन्तर बना रहा वहीं महामन्त्री विरजानन्द एडवोकेट, राष्ट्रीय व्यायामाचार्य हरपाल शास्त्री जी के नेतृत्व में आचार्य सन्तराम आर्य, मा. प्रदीप, मा. सज्जन राठी, मा. हरपाल, धर्मवीर सरपंच, प्रिं. आजाद सिंह, रामपाल शास्त्री, अशोक एडवोकेट, सूरजमल आर्य, डॉ. होशियार सिंह, जयपाल आर्य, किरणपाल आर्य, प्रिं. महेन्द्र शास्त्री, डॉ. श्यामदेव, बलवन्त सिंह आर्य, देवेन्द्र सैनी, दलबीर आर्य, सत्यप्रकाश आर्य, पवन आर्य, आत्म प्रकाश व रेनू खर्ब (उगालन), बाबूलाल आर्य-जूई, महेन्द्र पाल आर्य-नरवाना, राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह आर्य-टिटौली आदि की टीम पूरी तन्मयता के साथ शिविर की सफलता के लिए प्रयास करती रही।

जीन्द शहर व गांव खटकड़ में सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध निकाली गई शोभा यात्रा में युवाओं के गगन-भेदी नारों से गूंजा पूरा वातावरण - 5 जून, 2014 को सायंकाल सभी शिविरार्थियों द्वारा स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य हरपाल जी, आचार्य सन्तराम आर्य जी, डॉ. राजपाल आर्य व धर्मवीर सरपंच के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई। 7 जून को शिविर समाप्ति की पूर्व संध्या पर जीन्द शहर में शोभा यात्रा निकाली। युवाओं ने जहां गगनभेदी जयकारों से वातावरण को गुजायमान किया वहीं अपने व्यायाम एवं लाठी तथा बॉक्सिंग के प्रदर्शन से रोमांचित भी किया। महर्षि दयानन्द की जय, भारत माता की जय के साथ-साथ सामाजिक बुराईयों के खिलाफ भी नारे लगाए। यह पूरा कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरणादायी रहा।

समापन एवं सम्मान समारोह - शिविर का समापन 8 जून को प्रात: शिविरार्थियों के भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ हुआ। जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने की। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध समासेवी श्री रघुवीर खटकड़ रहे, जिन्होंने योग को अपने जीवन में अपनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर लगभग एक सौ कार्यकर्त्ताओं के साथ-साथ 10 सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थियों को भी सम्मानित किया गया।

उनका सम्मान व धन्यवाद जिनके सहयोग से हमारा साहस बढ़ा :- इस पूरे कार्यक्रम को सफल बनाने में जिन विशेष महानुभावों का सहयोग रहा उनमें सर्वश्री चौ. हरीसिंह सैनी (पूर्व मंत्री) जगदीश आर्य व ऋषिपाल आर्य (फरीदाबाद), इन्द्रजीत आर्य, विजय आर्य-नरवाना, अतर सिंह स्नेही, बाबू लक्ष्मी चन्द आर्य, सुभाष श्योराण (एम. डी. इण्डस स्कूल, जीन्द) भाई राजीव गिल (एम. डी. ऋषिकुल पब्लिक स्कूल, जीन्द) रघुवीर खटकड़-समाजसेवी, सूबेदार सेवा सिंह जांगड़ा, दलबीर सिंह, चौ. जसबीर देशवाल, हरपाल आर्य, मास्टर रामफल खटकड़, मास्टर महावीर सिंह (भीरा), रामकुमार खटकड़, सुधीर खटकड़, सतपाल सरपंच, शमसेर आर्य (गोसाई खेड़ा), दयानन्द आर्य अहिरका, सुनील खटकड़, दलबीर आर्य (मुकलान) आदि मुख्य हैं।

आपका विशेष धन्यवाद :- कोई भी कार्यक्रम बिना सामूहिक प्रयास के सफल नहीं होता। इतने बड़े आयोजन में जहां आर्थिक साधन जुटाने थे वहीं एक हजार युवाओं को एकत्रित करना, पूरे कार्यक्रम का विश्व व्यापी प्रचार करना भी एक बहुत बड़ी चुनौती थी। परन्तु इस चुनौती को पूरा करने में जहां स्वामी आर्यवेश जी का सान्निध्य मिला वहीं आर्य जगत की शान, विदुषी बहनें प्रवेश आर्या व पूनम आर्या का भी मनोबल बढ़ाने वाला सहयोग व मार्ग दर्शन मिला। हालांकि उन्होंने भी अपने स्तर पर बहुत बड़े शिविर का आयोजन स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ में किया फिर भी इस शिविर के लिए भी आर्थिक सहयोग में मदद करवाई। शिविर के पूरे संयोजन में जिन्होंने मेरा सहयोग किया उनका कर्ज उतारना बहुत मुश्किल होगा। उनमें सर्वप्रथम आचार्य सन्तराम आर्य जी का धन्यवाद जिन्होंने पूरे शिविर का संयोजन किया उसके पश्चात् मा. अशोक आर्य खटकड़ जिन्होंने छुट्टी लेकर पूरी व्यवस्था को संभाला, मा. प्रदीप जी-रोहतक, मा. सज्जन राठी-जीन्द ने शिविर व्यवस्था को संभाला। मा. हरपाल आर्य-भिवानी ने सोशल मीडिया की पूर्ण जिम्मेदारी स्वयं निभाई। भाई अमरजीत खटकड़ ने इलेक्ट्रॉनिक व प्रिन्ट मीडिया की जिम्मेदारी संभाली। डॉ. राजपाल आर्य (जाजवान) व मा. अजीत पाल ने भोजन व्यवस्था संभाली। मा. जितेन्द्र कुमार, अनिल कुमार, सोनू आर्य, संजय पहलवान, संदीप आर्य, कप्तान आर्य, विकास आर्य, विजय आर्य, पप्पल कुमार ने स्थानीय व्यवस्था में सहयोग किया। मोनू आर्य व विनोद खटकड़ में बिजली व्यवस्था में पूर्ण सहयोग किया। पानी की व्यवस्था सुरेन्द्र आर्य पाडला ने संभाली। यदि आप सभी इतनी तन्मयता, कर्मठता व गम्भीरता से इन व्यवस्थाओं को नहीं संभालते तो हम इस कैम्प को इतना सफल नहीं बना पाते।

thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का सार्वदेशिक सभा प्रधान बनने पर

हरियाणा की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा भव्य सम्मान समारोह का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न

डॉ. अनिल आर्य, धर्मपाल आर्य, रामकुमार आर्य तथा बिरजानन्द स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत करते हुए

श्योताज सिंह ने कहा कि आज आर्य समाज का नेतृत्व एक ऐसे व्यक्ति के पास आया है जिसमें संगठन को एक करने, सरकार के सामने अपना एजेण्डा रखकर अपनी बातें मनवाने की हिम्मत है। सभी मिलकर आर्य समाज को पुन: ऊँचाइयों तक पहुँचायेंगे।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधाना बहन पूनम आर्या ने कहा कि स्वामी जी का सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनना आर्य समाज का सौभाग्य है। उनके नेतृत्व में पूरा आर्य समाज एक झण्डे के नीचे आ सकता है।

राष्ट्रीय पंचायत के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ. राजमल हुड्डा ने कहा कि और किसी के अच्छे दिन आएं या न आएं परन्तु आर्य समाज के अच्छे दिन जरूर आ गए। मैं बधाई के साथ-साथ आश्वासन भी देता हूं कि राष्ट्रीय पंचायत हर मोर्चे पर आर्य समाज के साथ है। हम हर कदम पर आपका सहयोग करेंगे।

मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता डॉ. लक्ष्मण दास आर्य ने कहा कि देश के हर कोने में बैठा आर्य समाज का हर कार्यकर्ता आपसे खुश है और वो आपके नेतृत्व में कार्य करने के लिए उत्सुक एवं लालायित है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व मन्त्री व प्रसिद्ध गो-सेवक चौ. जयसिंह ठेकेदार ने कहा कि गांव-गांव में जाकर आर्य समाज को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। इसके लिए स्वामी जी को बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही हम सभी को इनका तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए ताकि हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश के प्रधान ब्र. रामफल ने कहा कि जैसा स्वामी जी का आदेश होगा हम तैयार हैं। बाकी पूरा उत्तर प्रदेश आपके प्रधान बनने से आशान्वित है कि अब आर्य समाज एक होगा।

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री महेन्द्र सिंह शास्त्री ने कहा कि स्वामी जी में मिलकर चलने की काबिलियत है जो आशा पैदा करती है कि अब एक मंच पर सब आयेंगे। उन्होंने कहा कि अब जगह-जगह स्वामी जी के सम्मान का कार्यक्रम चलना चाहिए।

लोकशक्ति मंच के प्रदेशाध्यक्ष श्री धर्मवीर सरपंच ने भी स्वामी जी को शुभकामनाएं दी तथा तन-मन-धन से सहयोग का आश्वासन दिया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपमंत्री प्रिं. आजाद सिंह ने कहा कि अब सोनीपत जिले की सभी आर्य समाजें एक जगह मिलेगीं। नया नेतृत्व, नई उम्मीद लेकर आया है।

राष्ट्रीय प्रवक्ता पवन कुमार आर्य ने कहा कि स्वामी जी की प्रबन्धशैली अद्भुत है जिससे आर्य समाज को नई ऊर्जा व एक सशक्त दिशा बोध होगा।

पूर्व विधायक चौ. अजीत सिंह ने कहा कि हमारे ऊपर स्वामी इन्द्रवेश जी का वरदहस्त रहा और हम आज स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में हैं। अब संगठन मजबूत होगा तथा आर्य समाज की राजनैतिक तथा सामाजिक ताकत बढ़ेगी।

वेद प्रकाशन हेतु सवा लाख रुपये की राशि दान देने वाली बहन मूर्ति देवी जी अपने पूरे परिवार सहित स्वामी आर्यवेश जी के साथ।

वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी ही सार्वदेशिक की गाड़ी को चलाने व उसे मुकाम तक पहुंचाने में सक्षम हैं।

डॉ. स्वतन्त्रानन्द शास्त्री ने कहा कि अब आर्य समाज में वही पुरानी परम्परा लौटेगी जिसको देखने के लिए आंखे तरस गई थी।

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के मालिक और आयुवृद्ध ज्ञान वृद्ध स्वामी ओमानन्द जी के परम शिष्य आचार्य वेदव्रत जी ने बड़े भावुकता भरे लहजे में कहा कि आज आर्य समाज के पुराने गौरव को लौटाने की आवश्यकता है। स्वामी जी के कन्धों पर यह भार है। परमात्मा इनको शक्ति दे व आर्य समाजियों को सद्बुद्धि दे ताकि वो एकता के प्रयास को सफल करने में अपना सहयोग दे सकें।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा के प्रधान योगाचार्य ब्र. दीक्षेन्द्र ने स्वामी आर्यवेश को आर्य समाज का ऐसा तेजस्वीप व्यक्तित्व बताया जिन्होंने प्रारम्भ से ही संघर्ष का जीवन जिया है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के प्रभारी रामकुमार आर्य, मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली के श्री रामपाल शास्त्री, चन्द्रदेव शास्त्री, आर्य युवक परिषद् हिसार के प्रधान दलबीर आर्य, प्रदेश प्रवक्ता सतपाल अग्रवाल, नशाबन्दी परिषद् जीन्द के प्रधान डॉ. राजपाल, डॉ. बलवीर आर्य व जसवन्त आर्य (जुलाना), सूरजमल पहलवान छात्तर, वेद प्रचार मण्डल हिसार के प्रधान रामकुमार आर्य, सत्यप्रकाश मित्तल, सत्यवीर आर्य (कैथल), राजेन्द्र आर्य व राजकुमार आर्य लाढ़ौत, डॉ. रणबीर खासा (एस.एम.ओ.) सुमन देशवाल (अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी), सतेन्द्र कुमार (युवा नेता), बबरूभान अहलावत, वैद्य ताराचन्द (खरखौदा), वैद्य धर्मपाल (झज्जर), आचार्य सत्यव्रत (रोहतक), डॉ. विवेकानन्द, डॉ. दिनेश, बाबूलाल आर्य जूई, आचार्य कर्मपाल, अशोक आर्य, मा. सज्जन राठी, मा. प्रदीप कुमार, मा. अजीत पाल, इंसपैक्टर निहाल सिंह, इन्सपैक्टर अर्जुन सिंह, सीताराम आर्य, महेन्द्र सिंह, मा. जयवीर आर्य, चौ. जय प्रकाश आर्य सोहरी, कर्मवीर आर्य व सुदामा आर्य (खटकड़), मास्टर सन्तराम आर्य (सुण्डाना), राजबीर वशिष्ट, डॉ. नारायण, शमसेर आर्य, जिले सिंह आर्य, जिले सिंह कुण्डू, बलवान सिंह, कृष्ण आर्य (ब्लॉक समिति सदस्य) डॉ. महावीर, राजेन्द्र सिंह आदि टिटौली से, पवन आर्य-हिसार, रूपेन्द्र आर्य, पंकज आर्य, मनोचा खण्डेलवाल (उ. प्र.), सहसरपाल, सुधीर, अंकित (उ. प्र.), सोनू आर्य, प्रवीण आर्य, शंकर आर्य, अजीत आर्य, सन्दीप आर्य, सन्नी जगतार, आशीष आर्य व अनिल आर्य, अमरजीत आर्य, बलराम गंगाना, बलवन्त सीसर, ओम प्रकाश आर्य, सुनीता खासा, सुशीला आर्या, सुषमा, शशि आर्या, इन्दू आर्या, ज्योति आर्या, रीमा आर्या, मोनिका आर्या, राजकुमारी आर्या, माता मूर्ति देवी, ओमपति देवी, ऊषा आर्या, मनीषा आर्या, नीलम आर्या आदि ने स्वामी जी को सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने पर हार्दिक बधाई दी। मंच का सुन्दर संचालन डॉ. श्यामदेव आर्य ने किया। कार्यक्रम की पूर्ण व्यवस्था व संयोजन आचार्य सन्तराम आर्य ने किया तथा भोजन व्यवस्था भी अपनी ओर से की।

- ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की प्रान्तीय बैठक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक में ऐतिहासिक निर्णयों के साथ सम्पन्न

23 नवम्बर, 2014 को रोहतक में होगा 10 हजार युवाओं का महाकुम्भ

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी के सार्वदेशिक सभा प्रधान बनने पर दी हार्दिक शुभकामनाएं

मई व जुलाई माह में आयोजित हुए शिविरों की समीक्षा की गई

13 जुलाई, 2014, रोहतक : आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा की प्रान्तीय बैठक 13 जुलाई, 2014 को प्रात: 10 बजे से 12 बजे तक आर्य समाज की गतिविधियों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश (आश्रम) विद्यापीठ, टिटौली में आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा इस अवसर पर विशेष आमंत्रित के रूप में परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधाना बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय व्यायामाचार्य हरपाल शास्त्री, राष्ट्रीय महामन्त्री बिरजानन्द एडवोकेट, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष प्रो. श्योताज सिंह, उपाध्यक्ष आचार्य सन्तराम व चौ. जयप्रकाश सोहटी आदि भी उपस्थित रहे।

बैठक में मई व जून माह में आयोजित समस्त शिविरों की समीक्षा की गई। जिनमें प्रान्तीय युवा चरित्र निर्माण शिविर, खटकड़ एवं प्रान्तीय कन्या चरित्र निर्माण शिविर महत्त्वपूर्ण चर्चा का विषय रहे। जिसे सभी ने सफल व उत्साहवर्द्धक बताया तथा निरन्तर बड़े शिविरों के आयोजन का निर्णय भी लिया गया।

शिविरों की समीक्षा के बाद कुछ अहम निर्णयों से पूर्व सर्वसम्मति से सभी ने परिषद् के राष्ट्रीय प्रधान को सार्वदेशिक सभा के प्रधान निर्वाचित होने पर आपस में बधाई दी तथा कहा कि इससे पूरी परिषद् की प्रतिष्ठा को भी चार चांद लगे हैं। सभी ने स्वामी जी का अभिनन्दन भी किया।

सभी ने परिषद् की ओर से 23 नवम्बर को रोहतक में एक विशाल सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया। जिसमें 10 हजार युवाओं को आर्य समाज में दीक्षित करने की योजना बनी।

अगले चार माह में 200 शिविरों की योजना पर भी गहन मन्त्रणा की गई जिसे अन्त में सर्वसम्मति से पास कर दिया गया। परिषद् के समस्त पदाधिकारियों ने यह निर्णय लिया कि स्वामी आर्यवेश जी को जो जिम्मेदारी सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद की मिली है उसमें भी हम सब स्वामी जी का पूर्ण सहयोग करेंगे परिषद् ने यह निर्णय भी लिया कि अगस्त मास में स्वामी जी का हरियाणा के सभी जिलों में स्वागत एवं सम्मान का कार्यक्रम भी आयोजित किया जायेगा।

बैठक का संचालन प्रदेशाध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने किया। इस अवसर पर महामन्त्री बहन प्रवेश आर्या, सज्जन राठी, अजय सिंह, मास्टर प्रदीप, डॉ. राजपाल, धर्मवीर सरपंच, पवन आर्य, सूरजमल पहलवान, प्रेम सिंह, बाबूलाल आर्य, दलबीर आर्य (मुकलान), मा. जयवीर, महेन्द्र सिंह, सत्यपाल अग्रवाल, सीताराम आर्य, सत्यवीर आर्य (कैथल), प्रिं. आजाद सिंह, प्रवीन आर्य, बलराम गंगाना, अमित कुमार, ऊषा आर्या, डॉ. नारायण, शमशेर सिंह, राजबीर वशिष्ठ, राजकुमार व राजेन्द्र आर्य, डॉ. श्यामदेव, डॉ. विवेक, डॉ. दिनेश, आचार्य सत्यव्रत, सुशीला आर्या, सुषमा आर्या, शशि आर्या, इन्दू आर्या, मोनिका आर्या, ज्योति, सोनिया, रीमा, अनिता आर्या, कर्मपाल आचार्य, अशोक आर्य, मा. अजीत पाल, पंकज आर्य, जगतार आर्य, उत्तम खटकड़, अनिल आर्य, दीपक आर्य, अमन आर्य आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

- प्रवेश आर्या, महामन्त्री

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1, नई दिल्ली में आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री व अन्य समस्त अधिकारी पुरोहितों का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

thearyasamaj.org

आर्य जगत के योगनिष्ठ संन्यासी
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन

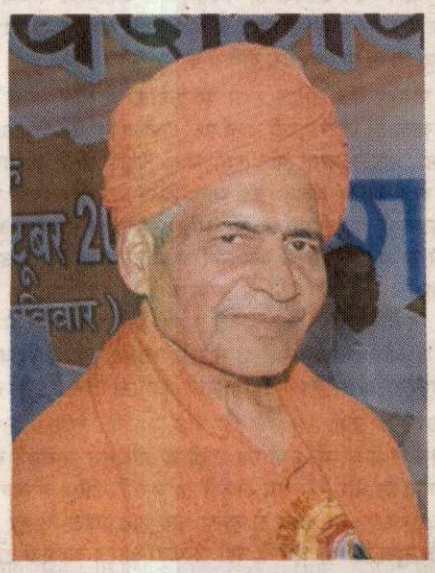

आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी, लेखक, कवि, योग प्रशिक्षक, ब्रह्मनिष्ठ स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी का अभिनन्दन समारोह 16 नवम्बर, 2014 (रविवार) को योग निकेतन पंजाबी बाग दिल्ली में समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर उनके सम्मान में प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन भी किया जायेगा। वैदिक धर्म व संस्कृति में अटूट आस्था रखने वाले मानवीय गुणों के पुंज, मृदु स्वभाव के धनी तथा चुम्बकीय व्यक्तित्व को धारण करने वाले तथा योग द्वारा विश्व शान्ति की कामना करने वाले योग निष्ठ संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी के अमृत महोत्सव पर देश-विदेश से उनके शुभ चिन्तक तथा अनुयायी पधार कर शुभकामनायें देंगे तथा वरिष्ठ आर्य संन्यासी अपना शुभ आशीर्वाद प्रदान करेंगे। इस अवसर पर अभिनन्दन समिति की ओर से स्वामी जी को शॉल, श्रीफल अभिनन्दन पत्र तथा योग विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए पर्याप्त धनराशि भेंट की जायेगी।

समस्त आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी के अमृत महोत्सव को सफल बनाने तथा सम्मानित करने के लिए अपनी आर्य समाज तथा अपनी संस्था की ओर से अधिक से अधिक धनराशि अविलम्ब भेजने की व्यवस्था करें। अपनी धनराशि अभिनन्दन समिति के नाम, पातंजलि योग धाम, आर्य नगर ज्वालापुर, हरिद्वार अथवा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्यालय ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड नई दिल्ली-2 को धनादेश, चैक, ड्राफ्ट द्वारा भिजवाने का कष्ट करें।

12 अप्रैल, 1939 को नगला नरू, दिव्य ग्राम मैनपुरी में श्री नाथूराम आर्य तथा श्रीमती द्रौपदी देवी के घर जन्में स्वामी दिव्यानन्द जी ने दर्शनाचार्य, वेदाचार्य एम. ए. वैदिक साहित्य तथा दर्शन शास्त्र, वेदों में योग विद्या पर पी. एच. डी. तथा डी. लिट, सहित उच्च शिक्षा प्राप्त की है। प्रारम्भिक अवस्था में कई स्थानों पर अध्यापन करने के उपरान्त 1964 में ब्रह्मचर्य दीक्षा तथा 27 नवम्बर, 1983 को श्रद्धेय स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा प्राप्त की। पातंजल योगधाम, आर्य नगर ज्वालापुर, हरिद्वार के अध्यक्ष के गरिमामय पदभार के अतिरिक्त आप अनेकों संस्थाओं के अध्यक्ष, संरक्षक तथा कुलपति के पदों को सुशोभित कर रहे हैं।

भारत तथा विदेशों में आपने अनेकों ध्यान योग शिविर लगाकर हजारों लोगों को लाभान्वित किया है। योग शिक्षा के अतिरिक्त बृहद यज्ञ ब्रह्मा, रोग चिकित्सा आयुर्वेद चिकित्सा के शिविरों का आयोजन तथा नि:शुल्क औषध वितरण का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहता है। आपका लक्ष्य है योग द्वारा विश्व शान्ति, सबको चरित्रवान बनाने की अभिलाषा तथा देश में आचारवान योगनिष्ठ धर्मात्मा नेताओं के चयन में योगदान। योग शिक्षा तथा समाज सेवा के साथ-साथ आपने लेखन तथा प्रकाशन का कार्य भी बहुलता से किया है आप द्वारा लिखी गीत कुसुमांजलि (संस्कृत) दिव्य कुसुमांजलि (हिन्दी) वेदों में योग विद्या, योगाचरण एवं शिष्टाचार, योग दर्पण, यज्ञ योग विद्या सहित अनेकों पुस्तकों का प्रणयन किया तथा पत्र-पत्रिकाओं में लेख तथा कविताएं नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं। आप ''वेद योगामृत'' पत्रिका का निरन्तर 14 वर्षों से कुशलता तथा विद्वता पूर्वक सम्पादन कर रहे हैं।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**	**आचार्य प्रेमपाल शास्त्री**
प्रधान	उपप्रधान	उपप्रधान
दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**पं. माया प्रकाश त्यागी**	**डॉ. अनिल आर्य**
स्वागताध्यक्ष	स्वागत मंत्री	मुख्य संयोजक
मुकेश वेदार्थी	**सुषमा यति**	**वैद्य इन्द्रदेव**
संयोजक	संयोजक	प्रचार मंत्री
डॉ. ओम प्रकाश अग्रवाल	**महेन्द्र आर्य**	
कोषाध्यक्ष	सह कोषाध्यक्ष	

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वेदों के पुनः प्रकाशन की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

thearyasamaj.org

संयुक्त परिवार, जहाँ उदारता वहाँ नहीं होगी दरिद्रता

– प्रभात झा

संयुक्त परिवार की आवश्यकता प्रारम्भ हो गई है। हाल ही में महानगरों में यह देखने में आया कि लोग अब परिवार को संयुक्त रखना चाहते हैं। भारत की विशेषता रही है संयुक्त परिवार। इस ओर लौटना शुभ संकेत है। साथ-साथ रहना हमारी प्रवृत्ति नहीं बल्कि प्रकृति है। प्रकृति के विरुद्ध हमें नहीं जाना चाहिए, इससे अनेकों नुकसान उभरकर सामने आए हैं। खुशी इस बात की है लोग संयुक्त परिवार की धारणा को कमजोर करने के दुष्परिणाम से धीरे-धीर अवगत होने लगे हैं। 'परिवार' से अलग होकर परिवार ही बनता है, पर उस परिवार का महत्त्व परिवार सा नहीं होता। अलग होने पर टूटने का दर्द भी बना रहता हैं उस दर्द का एहसास उस परिवार को हर पल बना रहता है।

संयुक्त परिवार में चिन्ता हो या चिन्तन हो, दोनों में संयुक्त भाव रहता है। जब चिन्तन संयुक्त होगा और चिन्ता में सामूहिकता होगी तो वह स्वयं बंट जाती हैं चिन्तन में सभी के विचार से उत्पन्न चिन्तन परिवार को बांधता है। वही चिन्ता जब सामूहिक होती है तो वह भी मिट जाती है।

संयुक्त परिवार में सबसे बड़ी बात है कि परिजनों से जीवन्त संपर्क और सम्बन्धों में मधुरता रहती है। कटुता का कोई स्थान नहीं होता। 'परिवार' में जो एक भाव अपनत्त्व का स्वयं प्रेरणा से आता है, उसी से सारा परिवार बंधा रहता है। दूसरी बात संयुक्त परिवार में लिहाज का महत्त्व बढ़ जाता है। बड़ों का लिहाज छोटों से स्नेह का वातावरण बहुत मजबूत हो जाता है।

एक दूसरे की परस्पर चिन्ता सदैव बनी रहती है पूरे परिवार के सम्बन्ध चिरायु बने रहते हैं। दीदी, भाई, काका-काकी, दादा-दादी, बुआ-फूफा, भतीजा-भतीजी, पोता-पोती, मुन्ना-मुन्नी, लल्ला-लल्ली सभी एक दूसरे के चाहते हैं वो फिर वह देवरानी हो या जेठानी हो सभी को सभी के बच्चे अपने ही लगते हैं। हर सम्बन्धों की परिभाषा स्वयं संयुक्त परिवारों में परिभाषित होती रहती है। कभी घर खाली नहीं लगता। घर सुनसान नहीं होता है। घर में किलकारी बनी रहती है। माधुर्य भाव सदैव बना रहता है। किसी चीज की कमी महसूस नहीं होती। समाज पर संयुक्त परिवार का प्रभाव भी अच्छा पड़ता है।

संयुक्त परिवार में 'अपना-तुपना' नहीं चलता। खेल में पढ़ाई में, घर के कामों, बाजार जाने में, घर-बीमारी में सगे सम्बन्धों के बीच में संयुक्त परिवार का प्रभाव शानदार रहता है। निज विश्वास के बजाए संयुक्त विश्वास का महत्त्व ज्यादा रहता है। काका-काकी या घर का जो बड़ा है, उसके बड़प्पन और जो छोटा रहता है उसके अल्हड़पन में सदैव तालमेल बना रहता है।

बचपन से ही एकमेव-एकता के सूत्र में पूरे परिवार को चलाना निश्चित दिशा तो देता ही है साथ ही एकता की प्रबलता को और भी प्रागट्य करता है। बांट-चिटकर कार्य करना, सामूहिक रूप से भोजन करना, इन सभी संस्कारों का जागरण होता रहता है। दु:ख भी बांटना है और सुख भी। संयुक्त परिवार में दायित्वबोध का जागरण होता है। एक-दूसरे के लिए दायित्वों को समझना संयुक्त परिवार की सबसे बड़ी देन है। मुण्डन से लेकर विवाह तक के संस्कारों का जो स्वरूप मिलता है, उसकी चर्चा गाँव से लेकर शहरों में भी होती है। सकारात्मकता संयुक्त परिवार की सबसे बड़ी देन है। यह भाव प्रारम्भ से ही पनपने लगता है।

संयुक्त परिवार में एक-दूसरे का साथ देना दायित्व समझा जाता है न कि किसी को उपकृत करना। एक-दूसरे के पूरक होकर रहने की क्षमता भी बढ़ती है। संयुक्त परिवार के आंगन में संस्कार सदैव पलते रहते हैं। आज सबसे महती आवश्यकता है संस्कारों की जो धीरे-धीरे घर, परिवार और समाज में से लुप्त होते जा रहे है।

संयुक्त में युक्त यानि जोड़। सदैव जुड़े रहने का भाव संयुक्तता में बना रहता है। आज इन भावों के विपरीत हर कार्य हो रहा है। संयुक्त परिवार बच्चों के ही नहीं बड़ों के प्रात: जागने से लेकर सोने तक की चिन्ता पूरा परिवार करता है। इतना ही नहीं यदि कोई कमजोर भी पड़ता है या हो जाता है, तो वह संयुक्त परिवार की मजबूती में दिखता ही नहीं है। सभी उसकी चिन्ता करते हैं सतत चलते रहना परिवार का स्वभाव हो जाता है। पूरे परिवार में 'उदारता' का भाव नित्य उत्पन्न और मजबूत हो जाता है। 'जहां उदारता वहाँ नहीं रह सकती दरिद्रता' यह कहावत संयुक्त परिवार में चरितार्थ होती है।

आज भटकाव आ गया है। लोग तत्काल अलग रहने की योजना बनाने लगते हैं। स्थिति इतनी भयावह हो गयी है कि परिवार के मुखिया जब खुद समझदार होते है तो वह घर-द्वार बांटने लगते हैं, कमरा तक अलग कर लेते हैं। हर घर का अलग स्वभाव, अलग चलन जो बहुत खतरनाक सा लगता है। न आने का समय, न जाने का समय। संयुक्त परिवार में प्रात: का पूजन नहीं तो सन्ध्या की आरती सभी की उपस्थिति का मानक बन जाती है आज तो स्थिति बद से बदतर हो चली है। कितना अकेले रह सकते हैं और कितनी जल्दी अकेले हो सकते हैं उसमें लोग महारथ हासिल कर रहे हैं। स्वयं और स्वयं से जना परिवार ही अपना परिवार मानने वाले लोग अधिक हो गये हैं। ऐसे वातावरण में व्यक्ति सदैव अकेला सा और ठगा सा रहता है यदि कहीं जाना है तो या तो परिवार के साथ जाओ या फिर उसे दीवारों के भरोसे छोड़कर।

संयुक्त परिवार बोझ लगता होगा पर एकाकी परिवार उससे भी बड़ा बोझ हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर 'अकेलापन' आड़े आता है परिणाम दिनभर अकेले। अगर पति-पत्नी दोनों नौकरी में हैं, तो बच्चे अकेले। सब कुछ अलग-थलक पड़ जाता है अगर कोई बीमार पड़ जाये तो भी कष्ट में, ये दर्द संयुक्त परिवारों में नहीं होता। अकेले और संयुक्त परिवार से अलग रहने के एक नहीं अनेक नुकसान सामने आते हैं। सबसे पहले अपने परिजनों के सम्बन्ध ही भूल जाते हैं, न काका-काकी, न दादा-दादी, न बुआ जी न भाई जी, न दीदी न भैया। सब कट जाते हैं और हम दो-हमारे दो में सभी सम्बन्धों की तिलांजलि हो जाती है। सम्बन्धों के स्मरण नहीं, विस्मरण का क्रम चलने लगता है।

यह खतरनाक होता जा रहा है जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी, भौजी-भैया जैसे सम्बन्धों में कमी आ जाती है और हम सम्बन्धों की उपेक्षा करने लगते हैं। धीरे-धीरे हम अकेले रह जाते हैं जीवन में अकेले रहने का एकाकीपन मन पर पत्थर से ज्यादा भारी होने लगता है। दर्द भी बांटना नहीं और सुख का भी आनन्द नहीं ले पाते। आंगन का एक होना पूरे परिवार के मन को एक कर देता है। बच्चे के सिर पर दादी के हाथों की सोने से पहले की थाप और छोटी-छोटी पौराणिक कहानियां बिना किसी पाठ्यक्रम के ज्ञान से भर देती थीं। सभी सम्बन्धों का बचपन में शरीर में स्पर्श एहसास करता था कि हम सभी के हैं। एक छोटी सी कथा है – एक ने, एक के, जन्म पर पूछा कि बताओ – मनुष्य के जन्म और जानवर के जन्म में क्या अन्तर होता है?इस प्रश्न का उत्तर देते समय कहा गया कि मनुष्य जब जन्म लेता है, तो वह किसी का बेटा/बेटी, भाई अथवा बहिन होता है अथवा किसी का चाचा होता है परन्तु जानवर किसी का कुछ भी नहीं होता है।' मनुष्य रिश्ते को जन्म देता है और जानवर किसी रिश्ते को जन्म नहीं देता। इस सच्चाई से कोई इनकार नहीं कर सकता। हम यहां दो उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, उससे संयुक्त परिवार क्यों?की दिशा-दशा स्पष्ट हो जायेगी।

संयुक्त परिवार के दो ताजे उदाहरण जो अपने आप में मिसाल कायम कर रहे है, को यहां रखना चाहता हूँ –

अगले पृष्ठ पर जारी है

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि ''हाँ'' तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य जगत के समाचार

स्वामी सुमेधानन्द जी का सांसद निर्वाचित होने पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), टिटौली (रोहतक) में सम्मान समारोह आयोजित

आर्य समाज के युवा संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी का सीकर (राजस्थान) से लोकसभा सदस्य चुने जाने पर 12 जून, 2014 को आर्य समाज की गतिविधियों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने स्वागत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी चन्द्रवेश जी (वेदाचार्य, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य) ने की। इस अवसर पर स्वामी जी को शुभकामनाएं देने वालों में युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश, उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री स्वामी ओमवेश, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश, पं. माया प्रकाश त्यागी, प्रो. श्योताज सिंह, बिरजानन्द एडवोकेट, स्वामी सोम्यानन्द, डॉ. विवेकानन्द, डॉ. श्यामदेव, राजबीर काशेराढ, डॉ. नारायण सिंह, मा. सज्जन राठी के अतिरिक्त सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे। स्वामी जी को आर्य युवक परिषद्, बेटी बचाओ अभियान, युवा निर्माण अभियान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा एवं नशाबन्दी परिषद् आदि संस्थाओं की ओर से भी शुभकानाएं दी गई। – ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 36वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन एवं राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 7 सितम्बर, 2014 प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक
स्थान : योग निकेतन सभागार (स्वामी योगेश्वरानन्द जी की तपोस्थली), 30–ए, रोड नं.–78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–110026

मिशन–25

यानि की 12 से 25 वर्ष तक के युवाओं को आर्य समाज के साथ जोड़ने का संकल्प, राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर आर्य समाज का चिन्तन, देशभर के चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम, राष्ट्रीय कार्यकारिणी व प्रान्तीय अध्यक्षों का परिचय

यज्ञ : प्रातः 9 से 10 बजे तक, अल्पाहार 10 से 11 बजे तक, ऋषि लंगर 1 से 2 बजे तक
आर्य समाज में उत्साह व जोश की एक नई लहर पैदा करने के लिए
आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

निवेदक

डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

केन्द्रीय कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली–7, दूरभाष – 9810117464, 9013 13 7070

पिछले पृष्ठ का शेष

संयुक्त परिवार, जहाँ उदारता वहाँ नहीं होगी दरिद्रता

ग्वालियर में एक परिवार है, जिसके तीन भाई साथ रहते हैं। इनके माता-पिता भी साथ ही रहते हैं एक चूल्हे पर ही पूरे परिवार का भोजन बनता है। पूरे परिवार में लगभग दस बच्चे हैं। सभी एक साथ रहते हैं। उस परिवार की एकता और संयुक्तता का एहसास इसी से हो जायेगा कि बीच वाले भाई के बच्चे की तबियत खराब हुई तो बड़े भाई की पत्नी (ताई जी) उनके बच्चों के साथ बड़ी मां की तरह उसके साथ उसका मुम्बई में इलाज करवाती रहीं। माँ ग्वालियर में रहीं और ताई जी मुम्बई में। घर के संयुक्त परिवार का यह विश्वास देखते ही बन रहा था। ऐसे स्नेह के वातावरण में स्वयं भगवान को आना पड़ा और उस बच्चे को जो 'ब्लड कैंसर' से पीड़ित था पूरी तरह ठीक हो गया। संयुक्त परिवार की एकता प्रतिबद्धता के आगे सभी को नतमस्तक होना पड़ता है। इससे बड़ा उदाहरण और कहाँ मिल सकता है। तीनों भाई दुकान बन्द करके आते हैं तो वे एक-एक दिशा में स्थित भगवान के दर्शन कर घर लौटते हैं पर घर पहुँचकर बड़े भाई को नकद (कैश) दे देते हैं। उसके बाद माँ को पूरी जानकारी देते हैं। फिर तीनों भाई एक साथ एक ही थाली में भोजन करते हैं। इस तरह का यह अनूठा संयुक्त प्रेम देखते ही बनता है।

इसी तरह इन्दौर का एक परिवार है जो सात भाई हैं, सातों ने एक सीरीज में मकान बनवाया है। सभी एक साथ रहते हैं। अलग-अलग मकान होने के बाद भी पूरा घर एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। एक संयुक्त हाल है उसी में एक बड़ा सा टी. वी. लगा हुआ है, सभी भाई, सभी बच्चे उसी हाल में रहते हैं। साथ-साथ बैठते-उठते हैं सभी का चौका एक-दूसरे के जाने लायक बना हुआ है सभी आते-जाते हैं। एक दो भाई प्रवास पर (बिजनेस दौरे पर) रहते है।, उसके बाद भी घर पर चार-पांच भाई बने रहते हैं। एकता की ऐसी मिसाल बहुत कम जगह देखने को मिलती है।

'संयुक्त परिवार' नैतिकता का अटूट बन्धन होता है। एकाकीपन या अकेले रहना परिजनों से दूर रहने जैसा अभिशाप ही हो जाता है। संयुक्त परिवार आज के भौतिकतावादी युग में परम आवश्यक है। संयुक्त परिवार में भारत बसता है, हमारी संस्कृति, परम्परा और मर्यादाएँ बसती हैं, दिक्कत यह है कि अकेले रहने वाली इण्डिया में भारी तकलीफ से रहते हैं परन्तु एकता के सूत्र में बंधे रहने वाले संयुक्त परिवार में नहीं। जबकि सच्चाई यही है कि भारतीय जीवनशैली का नाम ही है - संयुक्त परिवार। आईये हम और आप इस ओर पहल प्रारम्भ करें।

डॉ. धर्मवीर कपूर का निधन

आर्य समाज, कमालपुर होशियार पुर के वरिष्ठ संरक्षक डॉ. धर्मवीर कपूर का दिनांक 17 जून, 2014 शनिवार को निधन हो गया। 22 जून, 2014 को आर्य समाज कमालपुर के दयानन्द हाल में उनकी स्मृति में शोक सभा का आयोजन किया गया। जहां अनेकों आर्यजनों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। डॉ. कपूर नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी के रूप में याद किये गये, वे अखिल भारतीय कैमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे। वे अपने पीछे सम्पन्न आर्य परिवार छोड़ गये उनके सुपुत्र श्री अश्वनी कपूर प्रसिद्ध पत्रकार (पंजाब केसरी) और श्री रमन कपूर समाज सेवा में समर्पित हैं। सार्वदेशिक परिवार उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति तथा सद्गति की प्रार्थना करता है तथा दुःख सन्तप्त परिवारजनों के लिए धैर्य तथा ढाढस की कामना करता है।

चरित्रवान आर्य युवा ही देश की दिशा व दशा बदलेंगे

–सांसद डा.महेश शर्मा

आठ दिवसीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य समापन

नोएडा। रविवार, 15 जून 2014, आज केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,नई दिल्ली के तत्वावधान में गत् 7 जून से ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल,सैक्टर–44,नोएडा में चल रहे "आर्य युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर" का भव्य समापन हो गया । शिविर में 275 किशोर व युवकों ने प्रातः 4 बजे से रात्री 10 बजे तक अनुशासित दिनचर्या में रहकर नैतिक शिक्षा, योगासन, दण्ड–बैठक, लाठी, तलवार, जूडो–कराटे, बाक्सिंग, स्तूप, डम्बल, लेजियम, सन्ध्या–यज्ञ, भाषणकला, नेतश्त्व कला,. देश भक्ति की भावना, भारतीय संस्कशति की महानता पर शिक्षकों व विद्वानों से बौद्धिक व शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किये ।

मुख्य अतिथि सांसद डा.महेश शर्मा ने कहा कि चरित्रवान आर्य युवा ही देश की दिशा व दिशा बदल सकते हैं । देश के उत्थान व प्रगति में चरित्र निर्माण शिविरों का अपना विशेष महत्व है, इन युवकों ने ही देश को बदलने में व विश्व के अग्रणी देशों में भारत का स्थान बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभानी है । मैंने यहां आकर के बच्चों में देखा कि उनमें देश भक्ति, मानवता के प्रति प्रेम व इस समाज को एक अच्छा समाज बनाने की प्रेरणा काम कर रही है, इसके लिए मैं डा.अनिल आर्य व उनकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई देता हूँ। आज राष्ट्र विषम परिस्थतियों से जूझ रहा है ऐसे समय में यह युवक सुयोग्य आदर्श नागरिक बन कर आदर्श समाज की संरचना का कार्य करेंगे । महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर चल कर ही पूरे विश्व का कल्याण हो सकता है ।

समारोह अध्यक्ष डा.अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष,ऐमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि शिविर में प्रशिक्षित युवकों को अब समाज में व्यापत अन्धविश्वास, पाखण्ड व सामाजिक कुरीतियों को मिटा कर एक अच्छे समाज की संरचना का कार्य करना है । उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे उनके स्वपनों के भारत का निर्माण युवा पीढ़ी को ही करना है, संस्कारवान युवा ही देश में आमूल चूल परिवर्तन ला सकते हैं उन्हीं के कन्धों पर देश का भविष्य टिका हुआ है ।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने जो सामाजिक क्रान्ति का स्वपन देखा था वह इन युवकों को पूरा करना है । परिषद् आर्य समाज के समाजोत्थान व देशोत्थान के कार्य को पूरे देश में रचनात्मक रूप से आगे बढ़ायेगी । इस वर्ष 19 शिविर विभिन्न स्थानों पर चल रहे हैं ।

समारोह का शुभारम्भ आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री ने ओ३म् ध्वज फहराकर किया व आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। आचार्य भानुप्रकाश शास्त्री(बरेली) व प्रवीन आर्या के मधुर भजन हुए । प्रधान शिक्षक सूर्यदेव व्यायामाचार्य,योगेन्द्र शास्त्री, दुर्गाप्रसाद व सौरभ गुप्ता के निर्देशन में युवको के भव्य व आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन के कार्यकम की सभी ने मुक्त कंठ से सराहना की ।

समारोह में हजारों लोगों ने पधार कर युवा शक्ति का उत्साह वर्धन किया व ऋषि लंगर का आनन्द लेकर नये उत्साह के साथ घरों को लौटे ।

– डा.अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष
फोन:9810117464,9868051444,
011–27653604
e-mail: aryayouthn@gmail.com

सुन्दरगढ़ जिले में 230 परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

6 जनवरी को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक श्री परमानन्द आर्य के प्रयत्न से सुन्दरगढ़ जिले के गेलेईबाहल ग्राम में 230 विदेशी मत में गए परिवारों ने वैदिक धर्म दीक्षा ली। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, आर्य समाज साकेत दिल्ली के प्रधान श्री डॉ. पूर्ण सिंह जी डबास, दिल्ली के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी आदि प्रमुख रूप से पधारे।

पं. विशिकेशन शास्त्री एवं श्री वासुदेव होता के ब्रह्मत्व में दीक्षा लेने वाले 230 लोगों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुति देकर यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इस अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए हरियाणा दिल्ली से 10–12 विद्वान पधारे थे।

यह सारा कार्यक्रम पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के आदेश पर सम्पन्न हुआ। अंत में प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– आचार्य रणजीतार्य, विवित्स

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की आवश्यक बैठक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी.) नई दिल्ली की अन्तरंग सभा व सक्रिय कार्यकर्त्ता बैठक (रविवार) 20 जुलाई, 2014 को प्रातः 11 बजे, आर्य समाज, वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली में बुलाई गई है। अतः आपसे अनुरोध है कि अपना अमूल्य समय निकालकर बैठक में ठीक समय पर अवश्य पहुँचे तथा आर्य समाज के नवनिर्माण में भागीदार बनें।

– डॉ. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, मो.: – 9810117464

आर्य समाज रावतभाटा वाया कोटा (राज.) का वार्षिक चुनाव

1. श्री नरदेव आर्य – प्रधान
2. श्री ओम प्रकाश आर्य – मंत्री
3. श्री रमेश चन्द्र भाट – कोषाध्यक्ष

thearyasamaj.org

NDPSo on 18/19 जुलाई, 2014
प्रकाशन की तिथि : 17 जुलाई, 2014
वैदिक सार्वदेशिक 17 से 23 जुलाई 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

आर्य जगत के तेजस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत, कर्मठता एवं त्याग की प्रतिमूर्ति स्वामी इन्द्रवेश जी की 8वीं पुण्यतिथि 12 जून, 2014 के अवसर पर सम्मान समारोह एवं युवा संकल्प समारोह का आयोजन

स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा) स्वामी इन्द्रवेश स्मृति "आर्य विरक्त सम्मान से सम्मानित"

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री व प्रो. श्योताज सिंह स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य विद्वत सम्मान से नवाजे गये।

चार युवा संगठनकर्त्ता, चार महिला कार्यकर्त्ता, एक आर्य भजनोपदेशक सहित 21 आर्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया।

12 जून, 2014 (टिटौली) : आर्य जगत के महान तेजस्वी, युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत कर्मठता एवं त्याग की प्रतिमूर्ति स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा स्थापित युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा स्वामी इन्द्रवेश जी की 8वीं पुण्यतिथि के अवसर पर युवा संकल्प समारोह एवं सम्मान कार्यक्रम का आयोजन 12 जून, 2014 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली (रोहतक) में किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी ने की तथा मुख्य उद्बोधन स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी विजयवेश जी, प्रो. श्योताज सिंह जी, पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी रामवेश जी, मधुबाला शास्त्री जी, बिरजानन्द एडवोकेट जी आदि का रहा। इस अवसर पर आर्य जगत के बरिष्ठतम आर्य संन्यासी, सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के प्रधान, वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश) के संचालक स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी को स्वामी इन्द्रवेश स्मृति "आर्य विरक्त" सम्मान से सम्मानित किया गया। स्वामी जी को 21 हजार रुपये की राशि, श्रीफल, शॉल, स्मृति चिन्ह, महर्षि दयानन्द का चित्र,

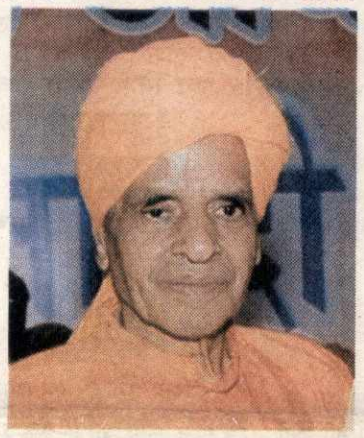

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति ग्रन्थ, मोतियों की माला, ओ३म् पट्ट इत्यादि भेंट किऐ गये।

आर्य पुरोहित सभा के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी व बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामन्त्री प्रो. श्योताज सिंह को स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य विद्वत सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें 5100-5100 रुपये, शॉल, स्मृति चन्हि, प्रशस्ति पत्र, स्मृति ग्रन्थ, श्रीफल, मोतियों की मालाएं, ओ३म् पट्ट, महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट किए गए।

आर्य भजनोपदेशक सम्मान से श्री जबर सिंह खारी को सम्मानित किया गया। उन्हें 5100/- रुपयें, शॉल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, श्रीफल, मोतियों की मालाएं, स्मृति ग्रन्थ इत्यादि भेंट किए गये।

पानीपत नूरवाला में डी. जी. वी. पब्लिक स्कूल की संचालक, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री राजपाल शास्त्री जी की सुयोग्य सुपौत्री, गुरुकुल की स्नातक श्री मति मधु बाला शास्त्री जी तथा बेटी बचाओ अभियान की कर्मठ कार्यकर्त्ता निर्मल आर्या (महम) को स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य महिला संगठनकर्ता सम्मान से सम्मानित किया गया। इन्हें भी नकद राशि सहित कई वस्तुएं भेंट की गई।

आर्य युवा संगठनकर्त्ता सम्मान से युवा संगठक श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री (गुड़गांव) एवं प्रिं. आजाद सिंह जी को भी नकद राशि व अन्य सामग्री भेंट कर सम्मानित किया गया।

इनके अतिरिक्त आर्य समाज के वरिष्ठ आर्य कार्यकर्त्ताओं को पगड़ी भेंट करके सम्मानित किया गया। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने किया तथा व्यवस्था बहन पूनम आर्या ने संभाली। इस अवसर पर आचार्य सन्तराम, डॉ. राजपाल, धर्मवीर सरपंच, वीरेन्द्र शास्त्री, राजेन्द्र लाढ़ौत, डॉ. शीशराम, कर्मवीर आर्य, माता मूर्तिदेवी, सज्जन राठी, मा. प्रदीप, इन्सपेक्टर अर्जुन सिंह, अजय पाल सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

- ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रदेशाध्यक्ष

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने पर गुरुकुल ततारपुर में स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन तथा प्रधानाचार्य पद से सेवा निवृत्त होने पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का विदाई समारोह

सार्वदेशिक सभा के प्रधान बनने पर गुरुकुल ततारपुर में स्वामी आर्यवेश जी का उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्मान किया गया तथा वक्ताओं ने स्वामी जी को कुशल संगठनकर्त्ता एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता बताया और आशा व्यक्त की कि स्वामी जी के नेतृत्व में आर्य समाज निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होता जायेगा। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि आप सबके सहयोग से आर्य समाज को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए मैं कृत संकल्प हूँ तथा आर्य समाज की एकता के लिए मैं प्राथमिकता के आधार पर कार्य करूँगा। उन्होंने गुरुकुलों के आधुनिकीकरण पर भी जोर दिया और कहा कि गुरुकुलों में सभी विषयों को पढ़ाने के साथ-साथ चरित्र बल पर विशेष ध्यान देना होगा।

इस अवसर पर गुरुकुल के प्रधानाचार्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी के प्रधानाचार्य पद से अवकाश ग्रहण करने पर विदाई समारोह का भी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, इफको के चेयरमैन तथा गुरुकुल ततारपुर के अध्यक्ष चौधरी शीशराम सहित सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी ने की।

आर्य समाजें वृष्टि यज्ञों का आयोजन करें

आज भयंकर अनावृष्टि के कारण सारा देश सूखे की चपेट में है किसान त्राहि-त्राहि कर रहे हैं तथा आमजन भीषण गर्मी से त्रस्त है। वेदों में वृष्टि यज्ञ के द्वारा वर्षा होने के सैकड़ों प्रमाण उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में भी हमारे विद्वानों ने विशेष मंत्रों तथा विशेष सामग्री के द्वारा विशाल यज्ञ करके अनेकों बार वृष्टि करवाने में सफलता प्राप्त की है।

हमारी देश की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों तथा दानी महानुभावों से अपील है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में विशाल वृष्टि यज्ञों का आयोजन करें। इस विशेष कार्य में सरकार तथा प्रशासन का सहयोग भी प्राप्त किया जा सकता है। विद्वान आचार्यों की देख-रेख में तथा विशेष मंत्रों तथा विशेष सामग्री से विधिवत यज्ञों का आयोजन करने से निश्चित रूप से वर्षा होगी और अनावृष्टि का वातावरण दूर होगा।

- स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

॥ओ३म्॥

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद (पंजीकृत) एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, फरीदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जन्मोत्सव व

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन समारोह

बुधवार, 23 जुलाई 2014, सायं: 5.00 बजे से 7.30 बजे

स्थान: आर्य समाज मन्दिर, सैक्टर-19, फरीदाबाद

कार्यक्रम

अध्यक्षता: आर्य नेता श्री लक्ष्मीचन्द आर्य जी

मुख्य अतिथि: डा. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्)

सानिध्य: श्रीमती विमला ग्रोवर (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद)

मधुर भजन: पं.राजेश शास्त्री

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक

महेशचन्द आर्य	*डा. गजराज सिंह आर्य*	*अशोक शास्त्री*	*अशोक गर्ग*
सभा मन्त्री	मन्त्री समाज	सभा कोषाध्यक्ष	कोषाध्यक्ष समाज

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद (पंजीकृत)

जितेन्द्र सिंह आर्य	*वेदप्रकाश शास्त्री*	*मनोज सुमन*	*सत्यभूषण आर्य*
संयोजक 9210038065	अध्यक्ष	महामन्त्री-9810064899	प्रभारी
सत्यपाल शास्त्री	*सुधीर कपूर*	*वीरेन्द्र योगाचार्य*	*सतपाल रहेजा*
प्रधान शिक्षक	उपाध्यक्ष	प्रान्तीय महामन्त्री	कोषाध्यक्ष

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।